Cosmos Multidisciplinary Research E-Journal
Online Available at www.cmrj.in
Recognized International Peer Reviewed Journal
Impact Factor 5.3
ISSN No. 2456-1665

अज्ञेय के काव्य चेतना का महत्व

डॉ. बिक्कड अभिमन्यु सदाशिवराव.
सहयोगी प्राध्यापक, राष्ट्रमाता इंदिरा गांधी कला, वाणिज्य
एवं विज्ञान महाविद्यालय, जालना

अज्ञेय जैसे साहित्यकारों की संख्या बहुत कम है। अज्ञेय ने जिस विधा में लिखा वहाँ अपनी छाप छोडी। उन्होंने उपन्यास, कहानी, निबंध, अनुवाद, यात्रा विवरण, पत्रकारिता में अपना नाम स्थापित किया। हिन्दी भाषा को समृद्ध बनाने में उनका बडा योगदान है। समीक्षा को परिपूर्ण बना दिया। ऐसे साहित्यकार से हर कोई प्रभावित हो जाता है।

अज्ञेय जी को तार सप्तक के प्रवर्तक माना जाता है। तार सप्तकों की योजना और प्रकाशन का श्रेय अज्ञेय जी को जाता है। प्रयोगवादा का घोषणा पत्र भी उन्होंने तैयार किया है। छायावादोत्तर कविता को प्रयोगवाद की ओर लेकर जाने का कार्य अज्ञेयने किया। उसी तरह से "आधुनिक हिन्दी साहित्य ने स्वतंत्रता के बाद जो विशिष्ट बदलाव किया उसके दिशा निर्देश में अज्ञेय की भूमिका महत्वपूर्ण रहीं।"[1]

अज्ञेय का काव्य विविध काव्य चेतना से भरा हुआ है। विषय की दृष्टि से उसमें विविधता दिखाई देती है। उन्होंने निजि प्रेरणा, वैज्ञानिक उपलब्धियों, यांत्रिक सभ्यताओं के गुण-दोषों को अपने काव्य का विषय बनाया है। उनमें बौद्धिकता भी पायी जाती है। बौद्धिकता के कारण उनकी कुछ कविताएँ निरस हो गयी। जैसे साँप कविता इस दृष्टि से है -

"साँप!
तुम सभ्य तो हुए नहीं
नगर में बसना भी तुम्हें नहीं आया,
एक बात पूँछू (उत्तर दोगे ?)
तब कैसे सीखा डँसना
विष कहाँ पाया।"[2]

हिन्दी कविता को आकार देने का काम अज्ञेय ने किया। उनकी काव्य चेतना में एक जाती और एक संस्कृति नजर आती है।

अज्ञेय एक महान कवि है। वे भारतीय परंपरा के महावृक्ष के नीचे बैठे हैं। वे उसके नीचे बैठे परंतु गतिहीन नहीं बने हैं। उस वृक्ष की विशालता के साथ मानवता के गतिशीलता का भी ध्यान किया है। वे हमेशा मानव की मूल प्रेरणा के नजदीक बैठे है। इसलिए उनकी काव्य चेतना अधिक बलशाली तथा मनुष्य के उपयोगी रहते हैं।

कविता के क्षेत्र में अज्ञेय का नाम जोडा जाता है। यह नाम 'प्रयोगवाद' से सम्बद्धीत है। कवि का हमेशा काव्य में नये नये शब्दों का प्रयोग करते हैं। इनके कविता में नये उपमानों, प्रतीकों के कारण कविता में प्रयोग का द्वार खुलता है। अज्ञेय के आदि के ऐसे प्रयोगों को 'प्रयोगवाद' नाम दिया है। वे इस नाम को सार्थक नहीं मानते और किसी वाद के घेरे में बंद करने को तैयार भी नहीं है।

"प्रयोगवादी धारा के कवियों में अज्ञेय का स्वर सबसे अधिक वैविध्यपूर्ण हैं। उनकी काव्य-चेतना में दु:ख एवं क्षण का महत्व, मोहभंग एवं आस्था का स्वर, यथार्थ के प्रति आग्रह, सहज प्रेम की अभिव्यक्ति, आत्मविस्तार की आकांक्षा, अकेलापन, व्यक्तित्व की स्थापना और उसके परिष्कार के अतिरिक्त व्यंग्य को पुट देते हुए सामाजिक चेतना की अभिव्यंजना है।"[3] उनके काव्य चेतना में बौद्धिकता एक वैशिष्टये है।

अज्ञेय के काव्य पक्ष में प्रतिक विधान, बिंब विधान, अलंकार विधान में अपनी प्रयोगशीलता एवं बौद्धिकता का प्रभाव रहा हैं। उनके काव्य में एक ओर बोलचाल के शब्द तो दूसरी ओर भारतीय धर्म, संस्कृति और विदेशी साहित्य और संस्कृति के शब्दों का प्रयोग दिखाई देता है। उनके काव्य चेतना की बड़ी विशेषता यह है कि शिल्प के माध्यम से जीवन को विश्लेषित करते हैं। उनके काव्य का वस्तु-तत्व जितना कठीन है उतना शिल्प नहीं। उनके काव्य की चेतना विशिष्ट और जीवंत है।

अज्ञेय ने भारतीय साहित्य को नई दिशा दी। अन्वेषण उनके साहित्य की एक विशेषता है। वे सच्चे कवि रुप रहे है। उन्होंने अपने साहित्य में नये विषय, नये भाव, नयी भाषा, नयी शैली आदि को अपने काव्य के लिए दिया हैं। वह इस प्रकार से -

"अज्ञेय की काव्यकृतियों में विविध भावों के दर्शन होते हैं। उनकी काव्य कृतियों में व्यक्त भाव सहृदयों को विमुग्ध करने में सक्षम हैं। अभिव्यंजना की दृष्टि में शैलीशिल्प के उपकरणों का निर्वाह करने के साथ-साथ नूतन शिल्प विधान में वे अग्रगण्य है और विषयों और नूतन शिल्प उपकरणों की ओर आज के नव-कवियों का ध्यान आकृष्ट करनेवाले वे प्रेरक हैं। देश-विदेश का भ्रमण करने के कारण उन पर पाश्चात्य प्रभाव काफी आया है, जिसे उन्होंने सही ढंग से आत्मसात कर हिन्दी कविता को आधुनिक बनाने में अहंम भूमिका निभायी है।"[4]

अज्ञेय प्रयोगवाद के प्रवर्तक है। उन्होंने छायावाद की भावुकता और प्रगतिवाद की मानसिकता से हिन्दी साहित्य को अलग करने का प्रयास किया है। कोई भी साहित्यकार अपनी प्रचलित परंपरा को तोडता है तो उसका विरोध होता है, और विरोध होना भी स्वाभाविक है।

उन्होंने कई कविताओं का सृजन किया है, उन कविताओं का अध्ययन करने के बाद हम कह सकते हैं कि, उनमें आत्मविस्तार की आकांक्षा दिखाई देती है। उनकी यह आत्म विस्तार की आकांक्षा संस्कृति के आधार पर निर्माण हुई।

इसी आत्म-विस्तार में आकांक्षा ने समय से मुक्त होने की भावना बलवती हुई। अज्ञेय महाकाव्यात्मक आकांक्षा के कवि है। 'असाध्य वीणा' की निम्न पंक्तियाँ इस दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है -

"वह महामौन
अविभाज्य, अनाप्त, अद्‌वित, अप्रणेय
जो शरदहीन
सब में गाता है।"[5]

अज्ञेय के साहित्य को देखने के बाद यह स्पष्ट होता है कि उनका दृश्य पट बहुत समृद्ध-सधन और सुघटित है। वे अपनी विविध कविता के आधार पर बोलना चाहते है। विविध आवाजों, रुपों के आधार पर आत्म विस्तार करना चाहते हैं। इससे ही उनकी कविता समृद्ध हुई है।

भाषा का सम्मान करनेवालों में अज्ञेय का नाम लिया जाता है। भाषा के संदर्भ में अज्ञेय बहुत ही सचेत कविं है। परंतु ऐसे साहित्यकारों की रचना दिन ब दिन घटती जा रही है। जो भाषा का सम्मान करते हैं अपनी भाषा को अपने में सिद्ध करते हैं।

"उनकी काव्य चेतना ने प्रयोगों को अत्याधिक महत्त्व दिया है। प्रतीक को उन्होंने सत्यान्वेषण का साधन कहा है। काव्य को वे सबसे पहले शब्द मानते हैं। समय के अनुसार प्रतीक, बिंब, पुराने पड़ जाते हैं। उनमें नये अर्थ भरने से काव्य में सौंदर्य बढ़ता है। 'साक्षात्कृत अनुभव की अभिव्यक्ति के लिए उचित शब्द, भाषा, प्रतीक, बिंब खोजने की उनमें सूक्ष्म चेतना कार्यशील रही हैं।"[5]

अज्ञेय किसी एक विचार धारासे जुडे हुए कवि नहीं थे। परंतु उनका स्वभाव किसी विचारधारा को विरोध करने का नहीं था। उन्होंने विचारवाद और मतवाद में हमेशा अंतर रखा है। उन्होंने कविता को मनोवैज्ञानिक दृष्टि से महत्व दिया है। उसी तरह से नैतिकता को वे अनिवार्य मानते थे। कला का मूल्यांकन वे नैतिकता के आधारपर नहीं करते थे। रचना कार्य एक स्वतंत्र अभिव्यक्ति है। इसी कारण से अज्ञेय की काव्य चेतना हिन्दी कविता में सबसे अलग है।

संदर्भ सूची :

1. धर्मयुग - संपादक - डॉ. धर्मवीर भारती, अप्रैल 1987, पृष्ठ. 5
2. इंद्रधनु रौदे हुए - अज्ञेय, दि. सं. पृष्ठ. 42
3. अज्ञेय कुछ रंग कुछ - श्रीलाल शुक्ल, प्र. सं. पृ. सं. 87
4. सदानीरा भाग 2 - संपा. अज्ञेय, प्र. सं. पृ. सं. 6
5. आँगन के पार द्वार - अज्ञेय, द्वि. सं. पृ. सं. 37